

न्यायपालिका

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» न्यायपालिका का परिचय और भूमिका

प्रश्न 1 (आसान). सरकार के तीन प्रमुख अंग कौन-कौन से हैं?

उत्तर – विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका।

प्रश्न 2 (आसान). न्यायपालिका का एक मुख्य कार्य क्या है?

उत्तर – संविधान की व्याख्या और सुरक्षा करना।

प्रश्न 3 (मध्यम). न्यायपालिका को 'निष्पक्ष' होना क्यों ज़रूरी है?

उत्तर – ताकि वह बिना किसी दबाव या पक्षपात के सही-गलत का फैसला कर सके और सभी को समान न्याय मिल सके।

प्रश्न 4 (कठिन). संविधान की रक्षा करने में न्यायपालिका की क्या भूमिका है?

उत्तर – यह सुनिश्चित करती है कि विधायिका और कार्यपालिका दोनों संविधान के प्रावधानों के अनुसार कार्य करें और अगर कोई कानून संविधान के खिलाफ हो तो उसे रद्द कर सकती है।

» स्वतंत्र न्यायपालिका की आवश्यकता

प्रश्न 5 (आसान). अगर न्यायपालिका स्वतंत्र न हो, तो क्या अमीर और गरीब को एक समान न्याय मिलेगा?

उत्तर – नहीं, अगर न्यायपालिका स्वतंत्र न हो, तो अमीर और ताकतवर लोग न्याय को प्रभावित कर सकते हैं।

प्रश्न 6 (आसान). कानून के शासन का क्या अर्थ है?

उत्तर – कानून के शासन का अर्थ है कि धनी और गरीब, स्त्री और पुरुष सहित सभी लोगों पर एक समान कानून लागू हो।

प्रश्न 7 (मध्यम). स्वतंत्र न्यायपालिका क्यों ज़रूरी है ताकि 'लोकतंत्र की जगह किसी एक व्यक्ति या समूह की तानाशाही न ले ले'?

उत्तर – क्योंकि अगर न्यायपालिका स्वतंत्र नहीं होगी, तो कोई शक्तिशाली व्यक्ति या समूह सत्ता का दुरुपयोग करके मनमाने फैसले ले सकता है और लोकतंत्र को खत्म कर सकता है। स्वतंत्र न्यायपालिका ऐसे मनमाने फैसलों को रोकती है।

प्रश्न 8 (कठिन). क्या न्यायपालिका की स्वतंत्रता का मतलब यह है कि वह किसी के प्रति जवाबदेह नहीं है?

उत्तर – नहीं, न्यायपालिका की स्वतंत्रता का मतलब स्वेच्छाचारिता नहीं है। वह देश के संविधान, लोकतांत्रिक परंपराओं और जनता के प्रति जवाबदेह होती है। उसे कानून के दायरे में रहकर ही काम करना होता है।

» न्यायपालिका की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के उपाय

प्रश्न 9 (आसान). न्यायाधीशों के वेतन और भत्ते के लिए किसकी स्वीकृति ज़रूरी नहीं होती?

उत्तर – विधायिका की स्वीकृति

प्रश्न 10 (आसान). न्यायाधीशों का कार्यकाल कैसा होता है? निश्चित या अनिश्चित?

उत्तर – निश्चित कार्यकाल

प्रश्न 11 (मध्यम). संविधान ने न्यायाधीशों की नियुक्ति में विधायिका को शामिल क्यों नहीं किया है?

उत्तर – दलगत राजनीति की भूमिका को रोकने और नियुक्तियों को निष्पक्ष बनाने के लिए।

प्रश्न 12 (कठिन). न्यायपालिका को 'अदालत की अवमानना' के लिए दंडित करने का अधिकार क्यों दिया गया है?

उत्तर – यह अधिकार न्यायाधीशों को सुरक्षा देता है और सुनिश्चित करता है कि उनके निर्णयों और कार्यों की नाजायज आलोचना न हो, जिससे वे स्वतंत्र रूप से काम कर सकें।

» न्यायाधीशों की नियुक्ति प्रक्रिया

प्रश्न 13 (आसान). सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति में आमतौर पर किस परंपरा का पालन किया जाता है?

उत्तर – सबसे वरिष्ठ न्यायाधीश को मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया जाता है।

प्रश्न 14 (आसान). उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति में राष्ट्रपति किससे सलाह लेते हैं?

उत्तर – भारत के मुख्य न्यायाधीश से।

प्रश्न 15 (मध्यम). कॉलेजियम प्रणाली में सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के साथ और कितने न्यायाधीश शामिल होते हैं?

उत्तर – चार अन्य वरिष्ठतम न्यायाधीश।

प्रश्न 16 (कठिन). न्यायाधीशों की नियुक्ति में कॉलेजियम प्रणाली क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर – यह न्यायपालिका की स्वतंत्रता सुनिश्चित करती है, ताकि कार्यपालिका का सीधा हस्तक्षेप न हो और न्यायाधीशों का चुनाव योग्यता के आधार पर हो।

» न्यायाधीशों को पद से हटाना

प्रश्न 17 (आसान). न्यायाधीशों को पद से हटाने की प्रक्रिया में कौन सा 'बहुमत' आवश्यक होता है?

उत्तर – विशेष बहुमत

प्रश्न 18 (आसान). किस न्यायाधीश को हटाने का प्रयास 'असफल' रहा था?

उत्तर – न्यायमूर्ति वी. रामास्वामी

प्रश्न 19 (मध्यम). विशेष बहुमत का क्या अर्थ है? इसमें कौन सी दो शर्तें शामिल हैं?

उत्तर – विशेष बहुमत का अर्थ है - 'सदन की कुल सदस्य संख्या का बहुमत' और 'उपस्थित और मतदान करने वाले सदस्यों का दो-तिहाई बहुमत'।

प्रश्न 20 (कठिन). न्यायाधीशों को पद से हटाने की प्रक्रिया को इतना कठिन क्यों बनाया गया है? इसके पीछे क्या कारण है?

उत्तर – इस प्रक्रिया को न्यायपालिका की 'स्वतंत्रता' बनाए रखने के लिए इतना कठिन बनाया गया है। यह सुनिश्चित करता है कि न्यायाधीश बिना किसी 'राजनीतिक दबाव' या 'कार्यपालिका के हस्तक्षेप' के निष्पक्ष होकर अपना काम कर सकें। सिर्फ 'कदाचार या अयोग्यता' साबित होने पर ही उन्हें हटाया जा सके।

» न्यायपालिका की एकीकृत संरचना

प्रश्न 21 (आसान). भारत में सबसे ऊपरी अदालत कौन सी है?

उत्तर – सर्वोच्च न्यायालय (Supreme Court)

प्रश्न 22 (आसान). भारत में न्यायपालिका की संरचना कैसी है?

उत्तर – एकीकृत (integrated) और पिरामिड जैसी

प्रश्न 23 (मध्यम). उच्च न्यायालय (High Court) किस स्तर पर काम करते हैं?

उत्तर – राज्य स्तर पर

प्रश्न 24 (कठिन). भारत में 'एकीकृत न्यायिक व्यवस्था' का क्या अर्थ है?

उत्तर – इसका अर्थ है कि पूरे देश में न्यायपालिका का एक ही सिस्टम है, जो ऊपर से नीचे तक जुड़ा हुआ है, और राज्यों के लिए अलग से कोई स्वतंत्र न्यायिक व्यवस्था नहीं है, बल्कि सभी न्यायालय एक-दूसरे के अधीन और नियंत्रण में काम करते हैं।

» सर्वोच्च न्यायालय का मौलिक क्षेत्राधिकार

प्रश्न 25 (आसान). कौन-से विवाद सीधे सर्वोच्च न्यायालय में शुरू होते हैं?

उत्तर – केंद्र और राज्यों के बीच के विवाद, और राज्यों के आपसी विवाद।

प्रश्न 26 (आसान). सर्वोच्च न्यायालय का 'मौलिक क्षेत्राधिकार' का क्या अर्थ है?

उत्तर – इसका अर्थ है कि कुछ मुकदमों की सुनवाई सीधे सर्वोच्च न्यायालय में हो सकती है, निचली अदालतों में नहीं।

प्रश्न 27 (मध्यम). अगर केरल और तमिलनाडु राज्यों के बीच नदी जल बंटवारे को लेकर कोई बड़ा विवाद हो, तो इसे सुलझाने के लिए किस न्यायालय में जाना होगा?

उत्तर – सीधे सर्वोच्च न्यायालय में, क्योंकि यह उसके मौलिक क्षेत्राधिकार में आता है।

प्रश्न 28 (कठिन). मौलिक क्षेत्राधिकार सर्वोच्च न्यायालय को संघीय मामलों में 'अंपायर' की भूमिका कैसे देता है? समझाओ।

उत्तर – संघीय व्यवस्था में केंद्र और राज्यों के बीच या राज्यों के आपस में विवाद होना स्वाभाविक है। सर्वोच्च न्यायालय इन विवादों का निपटारा सीधे करता है और संविधान की व्याख्या करके यह तय करता है कि कौन सही है, ठीक वैसे ही जैसे अंपायर खेल के नियमों के अनुसार फैसला सुनाता है।

» सर्वोच्च न्यायालय का रिट क्षेत्राधिकार

प्रश्न 29 (आसान). मौलिक अधिकारों के उल्लंघन पर कौन सा न्यायालय रिट जारी कर सकता है?

उत्तर – सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालय।

प्रश्न 30 (आसान). अगर किसी व्यक्ति को गैरकानूनी तरीके से हिरासत में लिया गया हो, तो कौन सी रिट जारी होगी?

उत्तर – बंदी प्रत्यक्षीकरण।

प्रश्न 31 (मध्यम). 'परमादेश' रिट का क्या अर्थ है और यह कब जारी की जाती है?

उत्तर – परमादेश का अर्थ है 'हम आदेश देते हैं'। यह तब जारी की जाती है जब कोई सार्वजनिक अधिकारी अपने कानूनी कर्तव्य का पालन नहीं करता।

प्रश्न 32 (कठिन). सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालय के रिट क्षेत्राधिकार में क्या अंतर है?

उत्तर – सर्वोच्च न्यायालय केवल मौलिक अधिकारों के उल्लंघन पर रिट जारी कर सकता है, जबकि उच्च न्यायालय मौलिक अधिकारों के साथ-साथ अन्य कानूनी अधिकारों के उल्लंघन पर भी रिट जारी कर सकता है।

» सर्वोच्च न्यायालय का अपीली क्षेत्राधिकार

प्रश्न 33 (आसान). सर्वोच्च न्यायालय किस अदालत के फैसलों के खिलाफ अपीलें सुनता है?

उत्तर – उच्च न्यायालयों के फैसलों के खिलाफ।

प्रश्न 34 (आसान). क्या सुप्रीम कोर्ट हर तरह की अपील सुनता है?

उत्तर – नहीं, केवल उन मामलों में जहाँ 'संविधान या कानून की व्याख्या करने जैसा कोई गंभीर मामला' हो।

प्रश्न 35 (मध्यम). अगर उच्च न्यायालय अपील की अनुमति न दे, तो क्या सुप्रीम कोर्ट फिर भी अपील सुन सकता है? क्यों?

उत्तर – हाँ, सुप्रीम कोर्ट सुन सकता है। क्योंकि 'सर्वोच्च न्यायालय के पास यह शक्ति है कि वह उस मुकदमे में की गई अपील को विचार के लिए स्वीकार कर ले' अगर उसे लगता है कि इसमें कोई गंभीर कानूनी मुद्दा है।

प्रश्न 36 (कठिन). अपीली क्षेत्राधिकार का क्या महत्व है और यह कैसे 'न्याय की आखिरी उम्मीद' बना रहता है?

उत्तर – यह सुनिश्चित करता है कि 'पूरे मुकदमे पर पुनर्विचार करेगा और उसके कानूनी मुद्दों की दोबारा जाँच करेगा', अगर 'निचली अदालतों ने कानून या संविधान का वह अर्थ नहीं समझा' जो होना चाहिए था, तो वह 'निर्णय को बदल सकता है' तथा इसके साथ उन प्रावधानों की नई व्याख्या भी दे सकता है। इससे नागरिकों को यह विश्वास रहता है कि न्याय की अंतिम सीढ़ी पर उनके केस को पूरी तरह परखा जाएगा।

» सर्वोच्च न्यायालय का सलाहकारी क्षेत्राधिकार

प्रश्न 37 (आसान). सर्वोच्च न्यायालय का सलाहकारी क्षेत्राधिकार किस अनुच्छेद में वर्णित है?

उत्तर – अनुच्छेद 143

प्रश्न 38 (आसान). क्या राष्ट्रपति द्वारा मांगी गई सलाह को सर्वोच्च न्यायालय देने से मना कर सकता है?

उत्तर – नहीं, सर्वोच्च न्यायालय सलाह देने को बाध्य है।

प्रश्न 39 (मध्यम). राष्ट्रपति द्वारा मांगी गई सलाह को मानना क्या राष्ट्रपति के लिए अनिवार्य है?

उत्तर – नहीं, राष्ट्रपति सलाह मानने के लिए बाध्य नहीं हैं।

प्रश्न 40 (कठिन). सलाहकारी क्षेत्राधिकार के पीछे मुख्य उद्देश्य क्या है? दो कारण बताओ।

उत्तर – राष्ट्रपति को महत्वपूर्ण कानूनी मामलों में सही निर्णय लेने में मदद करना और सरकार के कार्यों को संवैधानिक रूप से वैध बनाना।

» न्यायिक सक्रियता और जनहित याचिका

प्रश्न 41 (आसान). जनहित याचिका का दूसरा नाम क्या है?

उत्तर – सामाजिक व्यवहार याचिका (Social Action Litigation)

प्रश्न 42 (आसान). किस वर्ष से जनहित याचिका की अवधारणा में बदलाव आया?

उत्तर – 1979

प्रश्न 43 (मध्यम). न्यायिक सक्रियता का क्या अर्थ है?

उत्तर – जब न्यायपालिका अपने पारंपरिक कार्यों से आगे बढ़कर समाज के हित में कार्यपालिका और विधायिका के कार्यों पर भी नज़र रखती है और हस्तक्षेप करती है, तो इसे न्यायिक सक्रियता कहते हैं।

प्रश्न 44 (कठिन). जनहित याचिका ने न्यायपालिका को अधिक जनोन्मुखी (people-oriented) कैसे बनाया है? कोई दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर – जनहित याचिका ने न्यायपालिका को जनोन्मुखी बनाया है क्योंकि इसने उन 'समाज के वर्गों' को 'अदालत की शरण' लेने का अवसर दिया है जो पहले न्याय से दूर थे। उदाहरण के लिए, कैदियों के अधिकारों से संबंधित मामले (जैसे हुसैनारा खातून बनाम बिहार सरकार), या पर्यावरण सुरक्षा और गरीबों के जीवन को बेहतर बनाने से जुड़े मामले, जहाँ न्यायालय ने अखबार की खबरों को भी याचिका मानकर सुनवाई की।

» न्यायिक सक्रियता के प्रभाव और चुनौतियाँ

प्रश्न 45 (आसान). न्यायिक सक्रियता का एक सकारात्मक प्रभाव बताइए।

उत्तर – कार्यपालिका की जवाबदेही बढ़ना।

प्रश्न 46 (आसान). न्यायिक सक्रियता से न्यायालयों पर क्या बोझ बढ़ा है?

उत्तर – काम का बोझ।

प्रश्न 47 (मध्यम). चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशियों के लिए संपत्ति और शैक्षणिक योग्यता का शपथपत्र देना किस प्रभाव का उदाहरण है?

उत्तर – चुनाव प्रणाली को अधिक मुक्त और निष्पक्ष बनाना।

प्रश्न 48 (कठिन). न्यायिक सक्रियता के कारण सरकार के तीनों अंगों के बीच संतुलन क्यों प्रभावित हो सकता है?

उत्तर – क्योंकि न्यायालय कभी-कभी उन समस्याओं में उलझ जाता है जिन्हें कार्यपालिका को हल करना चाहिए, जिससे कार्यों का विभाजन धुंधला हो जाता है।

» न्यायिक पुनरावलोकन की शक्ति

प्रश्न 49 (आसान). न्यायिक पुनरावलोकन का अर्थ क्या है?

उत्तर – न्यायपालिका द्वारा किसी कानून की संवैधानिकता की जांच करना।

प्रश्न 50 (आसान). भारत में न्यायिक पुनरावलोकन की शक्ति किसके पास है?

उत्तर – सर्वोच्च न्यायालय (Supreme Court) के पास।

प्रश्न 51 (मध्यम). क्या भारतीय संविधान में 'न्यायिक पुनरावलोकन' शब्द का प्रयोग किया गया है?

उत्तर – नहीं, शब्द का सीधा प्रयोग नहीं है, लेकिन यह शक्ति संविधान की व्याख्या से मिलती है।

प्रश्न 52 (कठिन). न्यायिक पुनरावलोकन की शक्ति क्यों आवश्यक है?

उत्तर – यह संविधान की सर्वोच्चता बनाए रखने, मौलिक अधिकारों की रक्षा करने और सरकार के अंगों के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए आवश्यक है।

» न्यायपालिका और संसद के बीच संबंध

प्रश्न 53 (आसान). न्यायपालिका और संसद के बीच टकराव का एक प्रमुख मुद्दा क्या था?

उत्तर – संपत्ति का अधिकार और संविधान संशोधन की शक्ति।

प्रश्न 54 (आसान). केशवानंद भारती मामले में किस वर्ष में आया?

उत्तर – 1973 में।

प्रश्न 55 (मध्यम). 'संविधान के मूल ढाँचे' के सिद्धांत का क्या अर्थ है?

उत्तर – यह संविधान के वे मूल और अपरिवर्तनीय पहलू हैं जिन्हें संसद संविधान संशोधन द्वारा भी नहीं बदल सकती।

प्रश्न 56 (कठिन). केशवानंद भारती मामले ने भारतीय लोकतंत्र में 'checks and balances' को कैसे मजबूत किया?

उत्तर – इसने संसद की संविधान संशोधन की असीमित शक्ति पर एक कानूनी सीमा लगाई, न्यायपालिका को संविधान की अंतिम व्याख्या करने और 'मूल ढाँचे' की रक्षा करने की शक्ति दी, जिससे सरकार के तीनों अंगों के बीच एक स्वस्थ संतुलन स्थापित हुआ।

» संविधान का मूल ढाँचा सिद्धांत

प्रश्न 57 (आसान). केशवानंद भारती मुकदमा किस वर्ष हुआ था?

उत्तर – 1973

प्रश्न 58 (आसान). 'संविधान का मूल ढाँचा' सिद्धांत किस मामले में दिया गया था?

उत्तर – केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य

प्रश्न 59 (मध्यम). क्या संसद संविधान के किसी भी हिस्से को बदल सकती है?

उत्तर – नहीं, संसद संविधान के 'मूल ढाँचे' को छोड़कर बाकी हिस्सों को बदल सकती है।

प्रश्न 60 (कठिन). अगर संसद 'मूल ढाँचे' से छेड़छाड़ करने वाला कानून बनाती है, तो उसे कौन रद्द कर सकता है?

उत्तर – सर्वोच्च न्यायालय (Supreme Court) न्यायिक समीक्षा की शक्ति का उपयोग करके उसे रद्द कर सकता है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. अगर सरकार कोई ऐसा कानून बना दे जो लोगों के मौलिक अधिकारों का हनन करता हो, तो न्यायपालिका की क्या भूमिका होगी?

- › पहला कदम: कोई व्यक्ति या समूह इस कानून को चुनौती देते हुए अदालत जा सकता है।
- › दूसरा कदम: न्यायपालिका, विशेषकर सर्वोच्च न्यायालय, इस कानून की समीक्षा करेगा।
- › तीसरा कदम: न्यायपालिका देखेगी कि क्या यह कानून 'संविधान की मूल भावना' और 'मौलिक अधिकारों' के अनुरूप है।
- › चौथा कदम: अगर न्यायपालिका पाती है कि कानून मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करता है, तो वह उसे 'असंवैधानिक' घोषित कर सकती है और उसे रद्द कर सकती है।

उत्तर – न्यायपालिका उस कानून को असंवैधानिक घोषित करके रद्द कर देगी, जिससे लोगों के मौलिक अधिकारों की रक्षा हो सकेगी।

उदाहरण 2. मान लीजिए सरकार ने एक नया कानून बनाया है, जिससे किसी खास समुदाय के लोगों के अधिकार छिन रहे हैं। ऐसे में, स्वतंत्र न्यायपालिका की क्या भूमिका होगी?

› पहला कदम यह होगा कि वह पीड़ित समुदाय या कोई अन्य व्यक्ति इस कानून को चुनौती देने के लिए 'स्वतंत्र न्यायपालिका' का दरवाजा खटखटाए, यानी अदालत में याचिका दायर करे।

› दूसरा कदम, न्यायपालिका बिना किसी सरकारी दबाव के, सिर्फ संविधान और कानूनों को ध्यान में रखते हुए, इस नए कानून की संवैधानिकता की 'जांच' करेगी।

› तीसरा कदम, अगर न्यायपालिका को लगता है कि यह कानून 'व्यक्ति के अधिकारों' का उल्लंघन कर रहा है और 'कानून के शासन' के खिलाफ है, तो वह उसे 'असंवैधानिक' घोषित कर सकती है।

› चौथा कदम, इससे उस समुदाय के 'अधिकारों की रक्षा' होगी और सरकार को अपने फैसले बदलने पड़ेंगे, क्योंकि न्यायपालिका ने बिना किसी डर या पक्षपात के फैसला सुनाया है।

उत्तर – इस तरह, एक स्वतंत्र न्यायपालिका ने सरकार के गलत कानून से 'व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा' की और 'कानून की सर्वोच्चता' को बनाए रखा।

उदाहरण 3. भारतीय संविधान न्यायाधीशों को हटाने की प्रक्रिया को इतना कठिन क्यों बनाता है?

› पहला कदम है समझना कि न्यायाधीशों का निश्चित कार्यकाल उनकी स्वतंत्रता के लिए कितना ज़रूरी है। यदि उन्हें आसानी से हटाया जा सके, तो वे 'fear of removal' – हटाए जाने के डर से काम करेंगे।

› दूसरा कदम है सोचना कि 'what is the aim' – संविधान का उद्देश्य क्या है। उद्देश्य है 'to ensure impartiality' – कि वे बिना किसी पक्षपात या दबाव के निर्णय ले सकें।

› तीसरा कदम है जोड़ना कि अगर प्रक्रिया कठिन होगी, तो 'their position will be secure' – उनका पद सुरक्षित रहेगा और वे 'without pressure' काम कर पाएंगे।

› चौथा कदम है समझना कि संविधान निर्माताओं का मानना था कि 'a difficult removal process ensures judicial independence' – हटाने की प्रक्रिया कठिन होने से न्यायपालिका की स्वतंत्रता बनी रहेगी।

उत्तर – संविधान न्यायाधीशों को हटाने की प्रक्रिया को इसलिए कठिन बनाता है ताकि वे बिना किसी डर, पक्षपात या राजनीतिक दबाव के काम कर सकें और उनके पद की सुरक्षा बनी रहे, जिससे न्यायपालिका की स्वतंत्रता सुनिश्चित हो।

उदाहरण 4. सर्वोच्च न्यायालय के किसी न्यायाधीश की नियुक्ति में कौन-कौन से मुख्य हितधारक (stakeholders) शामिल होते हैं और उनकी भूमिका क्या है?

› पहला हितधारक है 'सर्वोच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश' (CJI) और 'चार अन्य वरिष्ठतम न्यायाधीश'। ये मिलकर 'कॉलेजियम' बनाते हैं।

› कॉलेजियम का काम है सर्वोच्च न्यायालय या उच्च न्यायालय में नियुक्ति के लिए 'नामों का प्रस्ताव' करना। ये नाम उनकी योग्यता और अनुभव के आधार पर चुने जाते हैं।

› दूसरा मुख्य हितधारक है 'भारत का राष्ट्रपति'। राष्ट्रपति को ये नाम कॉलेजियम द्वारा भेजे जाते हैं।

› राष्ट्रपति इन प्रस्तावित नामों में से ही न्यायाधीशों की 'औपचारिक नियुक्ति' करते हैं। हालांकि, कॉलेजियम की सलाह मानना अनिवार्य होता है।

› तीसरा हितधारक है 'कार्यपालिका' (मंत्रिपरिषद्)। शुरुआत में, वे सलाह दे सकते थे, लेकिन अब कॉलेजियम की सिफारिशों को मानना पड़ता है, जिससे न्यायपालिका की स्वतंत्रता बनी रहे।

उत्तर – सर्वोच्च न्यायालय के किसी न्यायाधीश की नियुक्ति में मुख्य रूप से सर्वोच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश और चार अन्य वरिष्ठतम न्यायाधीश (जो कॉलेजियम बनाते हैं), तथा भारत के राष्ट्रपति शामिल होते हैं। कॉलेजियम नामों का प्रस्ताव करता है, और राष्ट्रपति उन्हीं नामों में से औपचारिक नियुक्ति करते हैं। कार्यपालिका की भूमिका अब सलाह देने तक सीमित हो गई है, कॉलेजियम की सिफारिशों का सम्मान करना पड़ता है।

उदाहरण 5. मान लीजिए लोकसभा में कुल 543 सदस्य हैं। यदि किसी न्यायाधीश को हटाने का प्रस्ताव आया और 450 सदस्य उपस्थित होकर मतदान कर रहे हैं। इस प्रस्ताव को पारित करने के लिए कितने वोटों की आवश्यकता होगी?

› पहला नियम: 'कुल सदस्य संख्या का बहुमत'। लोकसभा की कुल सदस्य संख्या 543 है। इसका बहुमत होगा $(543/2) + 1 = 271.5 + 1 = 272$ वोट।

› दूसरा नियम: 'उपस्थित और मतदान करने वाले सदस्यों का दो-तिहाई बहुमत'। उपस्थित और मतदान करने वाले सदस्य 450 हैं। इसका दो-तिहाई होगा $(2/3) * 450 = 300$ वोट।

› प्रस्ताव पारित करने के लिए 'दोनों' शर्तों को पूरा करना होगा। यानी, कम से कम 272 वोट भी चाहिए और कम से कम 300 वोट भी चाहिए।

› इन दोनों में से 'अधिक' संख्या वाले वोट की आवश्यकता होगी।

उत्तर – इसलिए, इस प्रस्ताव को पारित करने के लिए '300 वोटों' की आवश्यकता होगी।

उदाहरण 6. भारत में न्यायिक व्यवस्था की संरचना किस प्रकार की है? इसमें सबसे ऊपर और सबसे नीचे कौन से न्यायालय आते हैं?

› पहला चरण: हमें समझना होगा कि भारत में 'एकीकृत' न्यायिक व्यवस्था है, जो एक पिरामिड जैसी संरचना में काम करती है।

› दूसरा चरण: इस संरचना के सबसे ऊपरी सिरे पर 'सर्वोच्च न्यायालय' (Supreme Court) है, जो पूरे देश के लिए न्याय का अंतिम प्राधिकरण है।

› तीसरा चरण: इस पिरामिड के सबसे निचले पायदान पर 'अधीनस्थ न्यायालय' (Subordinate Courts) और 'जिला न्यायालय' (District Courts) आते हैं, जो छोटे मामलों और स्थानीय स्तर पर न्याय प्रदान करते हैं।

› चौथा चरण: इनके बीच में 'उच्च न्यायालय' (High Courts) आते हैं, जो राज्यों के स्तर पर काम करते हैं और निचली अदालतों के फैसलों की अपील सुनते हैं।

उत्तर – भारत में न्यायपालिका की 'एकीकृत पिरामिड' जैसी संरचना है। इसमें सबसे ऊपर 'सर्वोच्च न्यायालय' और सबसे नीचे 'जिला न्यायालय व अधीनस्थ न्यायालय' आते हैं।

उदाहरण 7. कौन से विवाद सीधे सर्वोच्च न्यायालय के मौलिक क्षेत्राधिकार में आते हैं?

› सर्वोच्च न्यायालय के मौलिक क्षेत्राधिकार का मतलब उन मामलों से है जिनकी सुनवाई सीधे और पहली बार सर्वोच्च न्यायालय में होती है।

› इसमें मुख्य रूप से संघीय ढांचे से जुड़े विवाद शामिल होते हैं।

› पहला, केंद्र सरकार और एक या अधिक राज्य सरकारों के बीच का विवाद।

› दूसरा, एक तरफ केंद्र सरकार और एक या अधिक राज्य सरकारें हों, और दूसरी तरफ एक या अधिक अन्य राज्य सरकारें हों, उनके बीच का विवाद।

› तीसरा, दो या दो से अधिक राज्य सरकारों के बीच का आपसी विवाद।

उत्तर – केंद्र और राज्यों के बीच के विवाद तथा विभिन्न राज्यों के आपसी विवाद सीधे सर्वोच्च न्यायालय के मौलिक क्षेत्राधिकार में आते हैं।

उदाहरण 8. एक सरकारी अधिकारी ने एक नागरिक को उसके भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार का प्रयोग करने से रोक दिया। नागरिक इस स्थिति में सर्वोच्च न्यायालय के किस रिट का उपयोग कर सकता है?

› पहला कदम: नागरिक को यह पहचानना होगा कि उसके किस मौलिक अधिकार का उल्लंघन हुआ है। इस मामले में, यह भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है, जो एक मौलिक अधिकार है।

› दूसरा कदम: यह समझना कि जब मौलिक अधिकार का उल्लंघन होता है, तो सर्वोच्च न्यायालय 'रिट' जारी कर सकता है।

› तीसरा कदम: यह विचार करना कि उपलब्ध रिटों में से कौन सी रिट इस परिस्थिति के लिए सबसे उपयुक्त है। चूंकि यह किसी को रोकने का मामला है और सरकार को 'कुछ करने' (अधिकारों का सम्मान करने) का निर्देश देना है, तो 'परमादेश' (Mandamus) रिट सबसे सही रहेगी।

› चौथा कदम: नागरिक सर्वोच्च न्यायालय में 'परमादेश' रिट की याचिका दायर कर सकता है, जिसमें कोर्ट अधिकारी को उसके कर्तव्य का पालन करने और नागरिक के मौलिक अधिकार का सम्मान करने का आदेश देगा।

उत्तर – नागरिक 'परमादेश' (Mandamus) रिट का उपयोग कर सकता है।

उदाहरण 9. एक आपराधिक मामले में, जिला न्यायालय ने एक व्यक्ति को 10 साल की सजा सुनाई। उसने उच्च न्यायालय में अपील की, जिसने सजा को बरकरार रखा। व्यक्ति का वकील अब सर्वोच्च न्यायालय में अपील करना चाहता है। क्या वह ऐसा कर सकता है?

› हाँ, व्यक्ति सर्वोच्च न्यायालय में अपील कर सकता है।

› पहले, उच्च न्यायालय को यह प्रमाणित करना होगा कि मामले में 'संविधान या कानून की व्याख्या करने जैसा कोई गंभीर मामला' है।

› अगर उच्च न्यायालय प्रमाणपत्र नहीं देता, तब भी 'सर्वोच्च न्यायालय के पास यह शक्ति है कि वह उस मुकदमे में की गई अपील को विचार के लिए स्वीकार कर ले' यदि उसे लगता है कि मामले में पुनर्विचार की आवश्यकता है।

› सर्वोच्च न्यायालय 'पूरे मुकदमे पर पुनर्विचार करेगा और उसके कानूनी मुद्दों की दोबारा जाँच करेगा', यह देखने के लिए कि निचली अदालतों ने सही फैसला दिया है या नहीं।

उत्तर – हाँ, व्यक्ति सर्वोच्च न्यायालय में अपील कर सकता है, बशर्ते मामला सर्वोच्च न्यायालय के अपीली क्षेत्राधिकार के तहत आता हो (यानी उसमें कानून या संविधान से जुड़ा कोई गंभीर प्रश्न हो) और सुप्रीम कोर्ट उसे स्वीकार करे।

उदाहरण 10. मान लीजिए कि भारत सरकार 'किसी अंतरराष्ट्रीय संधि' पर हस्ताक्षर करने वाली है, लेकिन इस 'संधि के कुछ प्रावधानों' को लेकर कानूनी विशेषज्ञों के बीच 'संविधान की सर्वोच्चता' पर मतभेद हैं। इस स्थिति में राष्ट्रपति इस 'कानूनी सवाल' पर सर्वोच्च न्यायालय से 'सलाह कैसे' ले सकते हैं?

› पहला कदम: भारत के 'राष्ट्रपति को यह महसूस होगा' कि यह मामला 'सार्वजनिक महत्व' का है और इसमें 'संविधान की व्याख्या' से जुड़ा एक गंभीर प्रश्न है।

› दूसरा कदम: 'राष्ट्रपति भारत के सर्वोच्च न्यायालय' को 'एक औपचारिक संदर्भ' भेजेंगे, जिसमें वे 'विशिष्ट कानूनी प्रश्न या संधि के प्रावधानों' का उल्लेख करेंगे, जिन पर वे 'सलाह चाहते हैं'।

› तीसरा कदम: 'सर्वोच्च न्यायालय इस मामले की सुनवाई' करेगा, जिसमें 'सरकार के वकील' और 'अन्य संबंधित पक्षों' को अपनी बात रखने का मौका दिया जा सकता है। न्यायालय 'कानून और संविधान' का विश्लेषण करेगा।

› चौथा कदम: 'सर्वोच्च न्यायालय अपनी सलाह' एक 'रिपोर्ट' के रूप में 'राष्ट्रपति को भेजेगा'। इस रिपोर्ट में 'न्यायालय की राय और उसके पीछे के तर्क' विस्तार से लिखे होंगे।

› पांचवां कदम: 'राष्ट्रपति इस सलाह' पर 'विचार करेंगे', लेकिन उन्हें 'इसे मानना अनिवार्य नहीं' है। वे 'अपनी विवेकाधिकार' का प्रयोग करते हुए 'अंतिम निर्णय' लेंगे कि 'संधि पर हस्ताक्षर करना है या नहीं' और 'किस तरह से'।

› छठा कदम: यदि 'राष्ट्रपति सलाह को मानते हैं', तो 'सरकार अपने निर्णयों और नीतियों' में 'उस सलाह को शामिल' करेगी। यदि 'नहीं मानते', तो 'कारणों पर विचार' करके 'अपना अलग निर्णय' ले सकते हैं।

उत्तर – इस तरह, राष्ट्रपति 'एक औपचारिक संदर्भ' भेजकर सर्वोच्च न्यायालय से 'सलाह मांग सकते हैं', जिसे न्यायालय को 'देना होगा', लेकिन राष्ट्रपति 'उसे मानने के लिए बाध्य नहीं' हैं।

उदाहरण 11. उत्तराखंड के किसी पहाड़ी गाँव में लगातार वनों की कटाई हो रही है, जिससे भूस्खलन का खतरा बढ़ गया है और पानी के स्रोत सूख रहे हैं। गाँव के लोग अपनी आवाज़ सरकार तक नहीं पहुँचा पा रहे हैं। ऐसी स्थिति में, न्याय पाने के लिए किस प्रकार की याचिका दायर की जा सकती है और कौन इसे दायर कर सकता है?

› यह मामला 'वनों की कटाई' और 'पानी के स्रोतों के सूखने' से संबंधित है, जिसका प्रभाव पूरे गाँव और पर्यावरण पर पड़ रहा है। यह किसी एक व्यक्ति का नुकसान नहीं, बल्कि 'जनहित' का मामला है।

› चूँकि गाँव के लोग खुद अदालत तक नहीं पहुँच पा रहे हैं, तो कोई जागरूक नागरिक, 'पर्यावरण संगठन' (NGO) या कोई 'वकील' उनकी तरफ से याचिका दायर कर सकता है।

› ऐसी स्थिति में 'जनहित याचिका' (Public Interest Litigation - PIL) ही सबसे प्रभावी माध्यम है, क्योंकि यह 'न्यायिक सक्रियता' का एक रूप है जो न्यायपालिका को ऐसे मामलों में हस्तक्षेप करने की शक्ति देता है जहाँ सीधे पीड़ित पक्ष अदालत नहीं पहुँच पाता।

उत्तर – इस स्थिति में, कोई जागरूक नागरिक या पर्यावरण संगठन 'जनहित याचिका (PIL)' दायर करके गाँव वालों और पर्यावरण के लिए न्याय की गुहार लगा सकता है।

उदाहरण 12. एक ऐसे उदाहरण की पहचान कीजिए जहाँ न्यायिक सक्रियता ने न्याय व्यवस्था को लोकतांत्रिक बनाया हो, और एक ऐसे उदाहरण की भी, जहाँ इसने अंगों के बीच संतुलन को प्रभावित किया हो।

› पहले 'न्याय व्यवस्था के लोकतांत्रिकरण' वाले पहलू पर सोचो। इसका मतलब है कि आम लोगों तक न्याय कैसे पहुंचा? जनहित याचिका (PIL) का सबसे बड़ा प्रभाव इसी पर पड़ा है।

› उदाहरण के लिए, 'जेल के अंदर पुलिस द्वारा कैदियों की आँखें फोड़ना, पत्थर की खदानों में काम करने की अमानवीय दशा, बच्चों का यौन-शोषण' जैसे मामले जिन्हें 'PIL' के जरिए कोर्ट में लाया गया। इन मामलों पर कोर्ट ने संज्ञान लिया और 'गरीब व पिछड़े वर्ग के लोगों के अधिकारों' को महत्व दिया। इससे न्याय सभी के लिए सुलभ हुआ।

› अब 'अंगों के संतुलन' को प्रभावित करने वाले पहलू पर आते हैं। इसमें अक्सर कोर्ट ऐसे मामलों में 'intervene' करता है जो 'executive' या 'legislature' के क्षेत्र में आते हैं।

› जैसे, 'वायु और ध्वनि प्रदूषण दूर करना, भ्रष्टाचार के मामलों की जाँच करना या चुनाव सुधार करना' ये सभी कार्य 'विधायिका की देखरेख में प्रशासन को करना चाहिए' लेकिन कई बार न्यायालय को इसमें सक्रिय होना पड़ता है। इससे 'विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के कार्यों के बीच का अंतर धुँधला' हो जाता है और 'पारस्परिक संतुलन' बिगड़ता है।

उत्तर – न्याय व्यवस्था को लोकतांत्रिक बनाने का उदाहरण: 'जेल में कैदियों के अधिकारों के उल्लंघन' जैसे मामलों में जनहित याचिका (PIL) के माध्यम से न्यायालय का हस्तक्षेप। अंगों के संतुलन को प्रभावित करने का उदाहरण: 'वायु प्रदूषण नियंत्रण' या 'चुनाव सुधार' जैसे प्रशासनिक और विधायी मुद्दों पर न्यायालय का सीधा निर्देश देना।

उदाहरण 13. मान लीजिए कि केंद्र सरकार एक नया कानून बनाती है जिसके अनुसार, 'Every person must contribute 10% of their monthly income to a specific government fund, and this fund will be used for specific projects decided by the central government.' क्या यह कानून न्यायिक पुनरावलोकन के दायरे में आ सकता है? अगर हाँ, तो क्यों?

› सबसे पहले, हम यह देखेंगे कि यह कानून किस मूल अधिकार या संवैधानिक प्रावधान का उल्लंघन कर सकता है।

› यह कानून लोगों के 'right to property' या संपत्ति के अधिकार का उल्लंघन कर सकता है, क्योंकि यह अनिवार्य रूप से उनकी आय का एक हिस्सा ले रहा है बिना किसी स्पष्ट कानूनी प्रक्रिया या उचित मुआवजे के।

› सुप्रीम कोर्ट इसकी जांच करेगा कि क्या यह कानून 'reasonable restriction' है या मौलिक अधिकारों का सीधा उल्लंघन है।

› अगर सुप्रीम कोर्ट पाता है कि यह कानून संपत्ति के अधिकार का उल्लंघन करता है और संविधान के प्रावधानों के खिलाफ है, तो वह इसे 'unconstitutional' घोषित कर सकता है।

› कोर्ट यह भी देखेगा कि क्या यह कानून बनाने की शक्ति केंद्र सरकार के पास थी, या यह राज्य सूची का विषय है।

उत्तर – हाँ, यह कानून न्यायिक पुनरावलोकन के दायरे में आ सकता है क्योंकि यह 'संपत्ति के अधिकार (Right to Property)' और संभवतः 'नजिता के अधिकार (Right to Privacy)' का उल्लंघन कर सकता है। सुप्रीम कोर्ट इसकी संवैधानिकता की जांच करेगा।

उदाहरण 14. केशवानंद भारती मामले का भारतीय न्यायपालिका और संसद के संबंधों पर क्या प्रभाव पड़ा?

› समझो कि केशवानंद भारती मामला 1973 में आया, जब संसद और न्यायपालिका के बीच 'संविधान संशोधन' और 'मौलिक अधिकारों' को लेकर बहुत विवाद था।

› इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने 'संविधान के मूल ढाँचे' का सिद्धांत दिया।

› इसका मतलब यह था कि संसद संविधान में संशोधन कर सकती है, लेकिन वह 'मूल ढाँचे' को बदल नहीं सकती।

› इस फैसले से न्यायपालिका को 'संविधान का अंतिम व्याख्याकार' होने की शक्ति मिली, जिसने संविधान की रक्षा की।

› इसने संसद की 'संविधान संशोधन की शक्ति' पर एक सीमा लगाई, जिससे 'checks and balances' मजबूत हुए।

उत्तर – केशवानंद भारती मामले ने 'संविधान के मूल ढाँचे' का सिद्धांत स्थापित किया, जिसने संसद की संविधान संशोधन की शक्ति पर सीमाएँ लगाईं और न्यायपालिका को संविधान का संरक्षक बनाया, जिससे दोनों के बीच शक्ति संतुलन बना।

उदाहरण 15. संसद ने एक ऐसा संविधान संशोधन पारित किया जो भारत के 'लोकतांत्रिक स्वरूप' को 'राजतंत्र' में बदल देता है। क्या यह संशोधन वैध माना जाएगा?

› पहला कदम: हमें यह देखना होगा कि क्या 'लोकतांत्रिक स्वरूप' संविधान के 'मूल ढाँचे' का हिस्सा है। हाँ, न्यायपालिका ने कई बार स्पष्ट किया है कि लोकतंत्र भारत के संविधान का एक 'आधारभूत तत्व' है।

› दूसरा कदम: 'संविधान का मूल ढाँचा सिद्धांत' कहता है कि संसद भी संविधान के मूल ढाँचे को 'संशोधन' द्वारा नहीं बदल सकती।

› तीसरा कदम: चूंकि यह संशोधन भारत के 'लोकतांत्रिक स्वरूप' (जो कि मूल ढाँचे का हिस्सा है) को नष्ट करता है, यह 'मूल ढाँचा सिद्धांत' का उल्लंघन करता है।

उत्तर – नहीं, यह संशोधन वैध नहीं माना जाएगा। सर्वोच्च न्यायालय इसे 'असंवैधानिक' घोषित कर देगा क्योंकि यह संविधान के 'मूल ढाँचे' का उल्लंघन करता है।

बोर्ड परीक्षा के लिए खास

- बोर्ड परीक्षा में न्यायपालिका के कार्यों और उसकी स्वतंत्रता पर अक्सर प्रश्न पूछे जाते हैं। इन बिंदुओं को ध्यान से पढ़ें।
- यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'स्वतंत्र न्यायपालिका की आवश्यकता' और उसके 'महत्व' पर सीधे प्रश्न आते हैं। इसे अच्छे से समझकर जाना।
- यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर कॉलेजियम प्रणाली क्या है, और इसकी भूमिका पर सीधे प्रश्न आते हैं, तो इसे अच्छे से समझ लेना।
- यह प्रश्न अक्सर सीधे संरचना या उसके 'एकीकृत' प्रकृति पर पूछा जाता है। पिरामिड के स्तरों को सही क्रम में याद रखना बहुत महत्वपूर्ण है।
- यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर 'सर्वोच्च न्यायालय की शक्तियों' वाले प्रश्न में पूछी जाती है। इसका स्पष्ट उल्लेख करना अच्छे अंक दिलाएगा।
- यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर रिट के प्रकारों और उनके कार्यों पर सीधे प्रश्न आते हैं। हर रिट का नाम और उसका सटीक कार्य याद रखना बहुत ज़रूरी है।
- यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है कि सर्वोच्च न्यायालय के अपीली क्षेत्राधिकार का क्या अर्थ है और यह कैसे काम करता है। 'संविधान या कानून की व्याख्या' वाले गंभीर मामलों के उल्लेख को मत भूलना।
- यह क्षेत्राधिकार बोर्ड परीक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण है। खासकर 'राष्ट्रपति पर सलाह का बाध्यकारी न होना' और 'अनुच्छेद 143' को याद रखना। इन बिंदुओं को स्पष्ट रूप से लिखें।
- यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'न्यायिक सक्रियता' और 'जनहित याचिका' की 'परिभाषा', 'शुरुआत' और 'महत्व' पर सीधे सवाल आते हैं। साथ ही, इसके 'सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों' पर भी ध्यान दें।
- यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'न्यायिक सक्रियता' के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों को 'उदाहरणों सहित' याद रखना, और 'सरकार के अंगों के बीच संतुलन' पर इसके असर को समझना बहुत ज़रूरी है।
- यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर 'लॉन्ग आंसर' प्रश्न आते हैं, इसलिए इसकी परिभाषा, आवश्यकता और उदाहरणों को अच्छी तरह समझ लें।
- केशवानंद भारती मामले का 'संविधान के मूल ढाँचे' का सिद्धांत बोर्ड परीक्षाओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसे उदाहरणों के साथ समझकर लिखना सीखें।
- यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'केशवानंद भारती' केस का वर्ष और 'मूल ढाँचे' का अर्थ स्पष्ट रूप से याद रखना।

एक नज़र में रिवीज़न

- › न्यायपालिका = सरकार का अंग, संविधान का संरक्षक, अधिकारों का रक्षक।
- › विवादों का निष्पक्ष हल, अधिकारों की रक्षा, कानून का शासन, लोकतंत्र की सुरक्षा के लिए स्वतंत्र न्यायपालिका आवश्यक।
- › न्यायाधीशों की नियुक्ति कॉलेजियम प्रणाली द्वारा (CJI+4 वरिष्ठ जज), राष्ट्रपति करते हैं।
- › भारत की न्यायपालिका पिरामिड जैसी एकीकृत संरचना: सर्वोच्च उच्च जिला अधीनस्थ न्यायालय।
- › केंद्र-राज्य/राज्यों के आपसी विवादों की सीधी सुनवाई सर्वोच्च न्यायालय में।
- › मौलिक अधिकारों के उल्लंघन पर SC द्वारा जारी विशेष आदेश (रिट)।
- › सर्वोच्च न्यायालय अपील का उच्चतम न्यायालय; उच्च न्यायालय के विरुद्ध अपीलें; कानूनी मुद्दों की पुनर्जांच।
- › राष्ट्रपति सार्वजनिक/संवैधानिक मामलों पर SC से सलाह मांग सकते हैं; SC बाध्य, राष्ट्रपति नहीं।
- › PIL: जनहति याचिका, न्यायिक सक्रियता का उपकरण, 1979 से शुरू, गरीबों के लिए न्याय।
- › न्यायिक सक्रियता: लोकतंत्रीकरण/जवाबदेही (सकारात्मक); कार्यभार/अंगों का धुंधलापन (चुनौतियाँ)।
- › सुप्रीम कोर्ट की कानूनों की संवैधानिकता जांचने व असंवैधानिक होने पर रद्द करने की शक्ति।
- › केशवानंद भारती केस: 'मूल ढाँचा' सिद्धांत, संसद की संशोधन शक्ति पर सीमा।
- › केशवानंद भारती (1973) ने 'संविधान का मूल ढाँचा' दिया; संसद भी इसे नहीं बदल सकती।